भिवानी परिवार मैत्री संघ (पंजी.) का न्यूज लेटर

BPMS NEWS

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

विक्रम सम्वत् - 2078 ● मासिक पत्र : अगस्त 2021 ● पृष्ठ : 4 ● दिल्ली

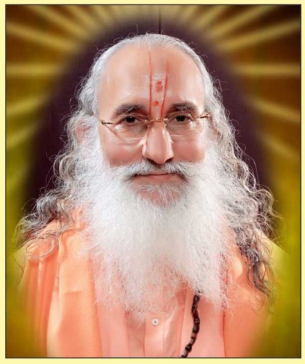

(1 अगस्त 1945)

भिवानी परिवार मैत्री संघ
के विशिष्ट संरक्षक परम श्रद्धेय
स्वामी श्री सदानंद जी
महाराज को 77वें
जन्मदिन की
बहुत-बहुत बधाई।

बधाई! बधाई!! बधाई!!!

भिवानी परिवार मैत्री संघ के त्रिवार्षिक चुनाव में

राजेश चेतन टीम सर्वसम्मति से निर्वाचित

प्रधान
श्री राजेश चेतन
9811048542

उपप्रधान
श्री हंसराज रत्हन
9212163340

उपप्रधान
श्री सुनील अग्रवाल
9899275130

महासचिव
श्री दिनेश गुप्ता
9810003215

कोषाध्यक्ष
श्री संजय जैन
9810032754

प्रचार मंत्री
श्री प्रमोद कुमार शर्मा
9868162572

संगठन मंत्री
श्री सुशील गनोत्रा
9899454931

सचिव
श्री पवन कुमार मोड़ा
9350461306

संयुक्त सचिव
श्री मनीष गोयल
9811195512

संयुक्त सचिव
श्री विनय सिंघल
9999190575

भिवानी परिवार मैत्री संघ (पंजी.) की मुख्य मासिक पत्रिका

BPMS NEWS

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

सम्पादक

जगत नारायण भारद्वाज

सह-सम्पादक

सुनीता शर्मा व मनीष गोयल

प्रबंध-सम्पादक

सुश्री मंजीत मरवाहा

कार्यालय

भिवानी परिवार मैत्री संघ, पंजीकृत (BPMS)

एफ-6, कोहली प्लाजा, सी यू ब्लॉक, उत्तरी पीतमपुरा, दिल्ली-110034

दूरभाष : 9999305530, E-mail: admin@ebhiwani.com

http://www.ebhiwani.com

भिवानी के लोग

श्री कपिल बगड़िया

आइये मिलते हैं छोटे कद के बड़े व्यक्तित्व Ernst & Young (E & Y) के CFO श्री कपिल बगड़िया से।

भिवानी के श्रद्धेय सूरजभान जी बगड़िया जी के परिवार में आपका जन्म हुआ।

हलवासिया विद्या विहार भिवानी से पढ़ाई करने के बाद आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी कॉम और बाद में CA किया ।

श्रीमती लक्ष्मी अग्रवाल से विवाह बंधन में बंधकर दो संतान ।

इस समय अपने पिता श्री जगदीश बगड़िया और माता जी के साथ गुरुग्राम में रहते हैं ।

वर्तमान में आर्थिक वर्ल्ड में सर्वाधिक लोकप्रिय E & Y कंपनी के Chief Financial Officer (CFO) के रूप में कार्यरत हैं ।

विनम्र, धार्मिक, ईमानदार, राष्ट्रभक्त, कर्मठ और समर्पित व्यक्तित्व है श्री कपिल बगड़िया का ।

हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं ।

सम्पादकीय

जगत नारायण भारद्वाज

मंदिर परिसर में समाधि का गुंबद व प्राचीन कूप

भिवानी नगर के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को किसी पूज्य महापुरुष की आवश्यकता हुई तो वे पास के गांव लुहानी के मठ में से एक महात्मा को ले आए। इनका नाम था हीरापुरी जी महाराज। वर्ण से ये ब्राह्मण थे और भगवा वस्त्र धारण करते थे। इनके वचनों में भिवानी के लोग श्रद्धा रखते थे। डोभी तालाब के बिल्कुल पास में ही एक कुंवा होता था, उसी कुंवे पर वे रहा करते थे। इन्हीं के आसपास ठाकुर सवाई सिंह नाम के एक राजपूत के पास बरछी नाम का हथियार होता था।

एक बार भिवानी के राजपूतों का आपस में किसी छोटी सी बात पर झगड़ा हो गया। कहा जाता है कि यह झगड़ा पानी को लेकर हुआ था। बात बढ़ते-बढ़ते खून खराबे तक आ पहुंची। सभी राजपूत अहंकार के वशीभूत आपस में दो भागों में बंट गए। उस समय हीरापुरी महाराज ने भांप लिया कि अब सर्वनाश हो सकता है। भाइयों की फूट गांव को नष्ट भ्रष्ट कर देगी। महाराज ने दोनों पक्ष के प्रमुख लोगों को बुलाया। सवाई सिंह से उनकी बरछी मंगवाकर एक स्थान पर गाड़ दी और सबको कहा कि इस स्थान को खोद दें। लोगों ने कुछ चमत्कार की आशा में अच्छा गहरा खड्डा खोद डाला। अब हीरापुरी जी महाराज ने सबको कहा कि हम इसमें जीवित समाधि लेंगे, कारण! यह अन्याय हमसे नहीं देखा जा सकता कि तुम सब आपस में लड़ मरे। आप संकल्प लें कि हमारी संतान भी आपस में कभी झगड़ा ही नहीं करेगी बल्कि नगर की रक्षा भी करेंगे। उसी समय कभी भी झगड़ा न करने की सबने कसम खाई, परन्तु हीरापुरिजी ने कहा कि ब्राह्मण का वचन गलत नहीं होगा और उन्होंने वहां सभी उपस्थित लोगों को हार्दिक आशीर्वाद दिया और वहीं पर जीवित समाधि ली। इससे पूर्व उन्होंने जांडी के पेड़ को केंद्र मानकर बापोड़ा से लेकर कोंट गांव तक एक लाइन खींच दी। भिवानी को दो भागों में बांट दिया ताकि भविष्य में किसी प्रकार का तनाव न बन सके।

एक पूज्य व्यक्तित्व ने भाइयों का झगड़ा होने से पहले ही सुलझा दिया तथा अपने प्राण देकर उनके प्रेम में स्थायित्व प्रदान किया।

किसी ने ठीक ही कहा है कि ब्राह्मण का शरीर बड़े कार्यों के लिए बना है क्षुद्र कामों के लिए नहीं।

आज जहां पूज्य हीरापुरी महाराज की समाधि है वहां प्राचीन शिव मंदिर है जहां प्रतिवर्ष सैकड़ों भक्त गोमुख व हरिद्वार से कांवड़ लाकर अपनी मन्नतें पूरी करते हैं। जिस कुंवा के लिए झगड़ा हुआ था वह आज खत्म हो गया है। ऐसी प्राचीन धरोहरों को यहां के राजपूतों ने समाज के साथ मिलकर संरक्षित करनी चाहिए।

साभार आउटलुक पत्रिका

शहरनामा-भिवानी

माधव कौशिक (साहित्यकार)

छोटी काशी :-सात सौ साल पुराने हरियाणा के जिला मुख्यालय भिवानी का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। नगर में मंदिरों की संख्या के कारण लोग इसे 'छोटी काशी' भी कहते हैं। छोटे से कस्बे से भरे-पूरे शहर के रूप में विकसित होने वाला भिवानी अपनी परंपरा से प्राप्त ऐतिहासिक भवनों तथा इमारतों का संरक्षण करने में विफल रहा है। अंग्रेजों के समय का 'घंटाघर' सत्तर के दशक में प्रशासन ने ही धराशायी कर दिया। सौन्दर्यीकरण के नाम पर सभी बारह दरवाजे, बीसीओं तालाब और बावड़ियां और बेजोड़ हवेलियां समाप्त हो गई। शहर सुंदर तो नहीं हुआ, लेकिन अपनी अनुपम स्थापत्य से वंचित जरूर हो गया। चार दशक पहले यहां कला, संगीत और साहित्य अभिजात्य की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक सलीका था। हमारी पीढ़ी के सभी कवियों ने काव्य शास्त्र की बारीकियां विश्वविद्यालयों में जाने से पहले नगर के हलवाइयों, कामगारों तथा दस्तकारों से सीख ली थी। इतने सारे परिवर्तनों के बावजूद नागरिकों की सहृदयता तथा संवेदनशीलता आज भी बरकरार है।

भारत का क्यूबा :- आज भी लोग चौपाल की सर्वस्वीकृति संस्कृति से अभिभूत हैं। स्वतंत्रता सेनानी पं. नेकीराम शर्मा, महान साहित्यकार माधव प्रसाद मिश्र तथा प्रतिष्ठित संगीतज्ञ पं. गोपालकृष्ण के चरण-चिन्हों पर चलने वाले उत्साही युवा अब भी मौजूद हैं। हालांकि रात-रात भर चलने वाले कवि सम्मेलनों, संगीत सम्मेलनों तथा ख्यालबाजी के दंगल अब नहीं होते। पुराने चलन के अखाड़े तथा कुश्ती की व्यायामशालाएं भले ही न रहीं, लेकिन मुक्केबाज, एथलेटिक्स और खेलों में भिवानी के नाम का डंका पूरी दुनिया में बजता है।' भारत का क्यूबा' कहलाने वाले इस नगर ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर के बहुत से मुक्केबाज और खिलाड़ी दिए हैं।

पहलवान के दही-भल्ले :- आज एक भरे-पूरे विश्वविद्यालय, दर्जनों महाविद्यालयों तथा कई शैक्षणिक संस्थाओं से सुसज्जित इस शहर में कभी पं. सीताराम शास्त्री की संस्कृत पाठशाला भी होती थी, जिसके विद्वानों का लोहा पूरा देश मानता था। बड़े अस्पतालों तथा स्वास्थ्य केंद्रों के बावजूद 'कान्हीराम धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय' की प्रसिद्धि आज भी है। लेकिन टेक्सटाइल उद्योग के लिए मशहूर इस शहर के लोग अब कपड़ा खरीदने दूसरे शहरों में जाते हैं। 'गेटवे ऑफ राजस्थान' कहलाने वाले इस शहर की गुड़ और खांडसारी मंडी की मिठास अब ढूंढने से भी नहीं मिलती। खाने-पीने के शौकीनों का यह शहर अब दक्षिण भारतीय व्यंजनों, पिज्जा, बर्गर तथा चाउमीन के चटखारे भी लेने लगा है किंतु पुराने लोग आज भी हालू बाजार के देसी घी के पकवान, मालपुए तथा पं. निरंजन हलवाई का गाजरपाक, बनवारी लाल मस्ता के पेड़े, मोतीलाल का कढ़ाई वाला दूध, गंगूराम के छोले और पहलवान के दही-भल्ले आज भी याद करते हैं। एक उक्ति बड़ी प्रसिद्ध है कि भिवानी में जन्मा व्यक्ति देश-विदेश के किसी भी कोने में रह, उसका मन रहता है इन्हीं गलियों, गलियारों, चौपालों तथा चौराहों में। हर शाम को दीया-बाती करते हुए एक दीपक वह अपने शहर की खुशहाली के लिए जरूर जलाता है।

आबोहवा का कर्ज :-हर पुराने शहर का अपना मिजाज, रंग-रूप, अपनी छटा और छवि होते हैं। समय के साथ बहुत कुछ छूट जाता है तो काफी कुछ जुड़ता भी है। उनकी रंगों में खून के साथ दौड़ता है। कभी आवाज लगाता है तो कभी स्मृतियों के गलियारे में चुपचाप चहलकदमी करता है। ऐसा ही कुछ अनुभव पिछले दिनों ख्यातिप्राप्त कलाकार राम प्रताप वर्मा की डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'वैनिशिंग ट्रेजर ऑफ वॉल पेंटिंग्स' देखकर हुआ था। इस फिल्म में भिवानी की पुरानी हवेलियों की दीवारों तथा छतों पर बने भित्तिचित्रों के माध्यम से नगर की सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक गरिमा और महिमा को संपूर्ण कलात्मकता के साथ दर्शाया गया है। इसी शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक रोमांचित करने वाली है। यह फिल्म यह भी सिद्ध करने में सफल रही कि लोक कलाओं का विकास तथा उनका निवास सामान्य जन के हृदय में ही होता है।

अंधी दौड़ में धरोहर :-कुछ दिनों के बाद यही अनुभव विचलित करने वाला सिद्ध हुआ। इन भग्न हवेलियों की इस धरोहर को संभालने वाला कोई नहीं है। जर्जर दीवारों का महाभारत, रामायण, श्रीमद्भागवत तथा ऐतिहासिक प्रसंगों के चित्र, उनका रंग संयोजन, उनकी भाव-भंगिमाएं सब धीरे-धीरे नष्ट हो रही हैं मगर भौतिकवाद की अंधी दौड़ में शामिल समाज को इसकी फिक्र नहीं। शासन-प्रशासन तो वैसे ही कला, साहितय और संस्कृति से सदा विमुख रहा है, उससे कुछभी अपेक्षा रखना बेकार है। कमाल की बात तो यह है कि दीवारों पर चित्रित इन जीवंत कथानकों को आकार देने वाले कलाकार अधिकांशत: मुसलमान थे।

शहरे-गुलशन की स्मृतियां :-लगभग चार दशक ये चंडीगढ़ जैसे सुनियोजित और सुंदर शहर में रहने के बावजूद भिवानी मेरी चेतना का अविभाज्य अंग है। मेरी बहुत सी कहानियों के पात्र , घटनाएं तथा पृष्ठभूमि इसी नगर की हैं। कई गजलें, कविताएं तथा गीत इसकी आबोहवा की ऋणी है। जब भी अकेलापन सताने लगता है, स्मृतियों के इस खजाने से कुछ लम्हे चुरा लेता हूं। शहरे-गुलशन में भी जिसकी याद तड़पाती रही, कोई न कोई कशिश इस शहर की माटी में थी।

जन्मदिन की बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री बृजलाल सराफ
संरक्षक सदस्य
2 अगस्त

श्री अरुण शर्मा
संरक्षक सदस्य
2 अगस्त

श्री नरेन्द्र सिंघानिया
संरक्षक सदस्य
5 अगस्त

भिवानी गौरव
श्री गुलशन वर्मा
8 अगस्त

भिवानी गौरव
श्री पी.के. आनन्द
8 अगस्त

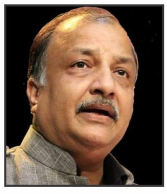

श्री राजेश चेतन
प्रधान-बीपीएमएस
8 अगस्त

भिवानी गौरव
श्री अशोक शर्मा
9 अगस्त

श्री राज कुमार अग्रवाल
संरक्षक सदस्य
13 अगस्त

श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता
संरक्षक सदस्य
13 अगस्त

भिवानी गौरव
श्री आनन्द प्रकाश आर्टिस्ट
15 अगस्त

श्री स्वतंत्र कुमार
संरक्षक सदस्य
15 अगस्त

श्री विनय सिंघल
संयुक्त सचिव-बीपीएमएस
16 अगस्त

श्री प्रतीक कुमार मोडा
संरक्षक सदस्य
28 अगस्त

भिवानी के साहित्यकार

श्री कृष्ण मंजर

श्री कृष्ण मंजर जी की आँख खुली तो खुद को कवि कुल में पाया!! बचपन से चारों तरफ कविता ही कविता को पाया!! कवि मूलचंद जी मूल के सुपुत्र कृष्ण मंजर जी का मानना है कि कविता उनके रग-रग में समायी है !! कृष्ण मंजर जी के भाईसाहब श्री मामनचंद दूरदर्शन में इंजीनियर थे!! कृष्ण मंजर जी बीएसएनएल में सीनियर टेलीग्राम मास्टर ऑपरेटिव कार्यरत रहे है एवं 2003 में 60 वर्ष की उम्र में सेवानिवृत हुए। कृष्ण मंजर जी श्रृंगार रस में लिखते है और हरियाणवी एवं उर्दू में भी लिख लेते है। आज 89 साल की उम्र में भी खाली समय में म्यूजिकल इंस्ट्रुमेंट्स जैसे की हारमोनियम, गिटार आदि की टूनिंग करते है। स्थाई रूप से भिवानी में निवास स्थान है और 2008 में पहली पुस्तक आयी, और फिर कारवां यूँ चला कि अब तक 4 पुस्तकें प्रकशित हो चुकी हैं तथा पांचवीं पुस्तक की तैयारी है।

प्रकाशन :-

कोइ ना कोई बात सै- हरियाणवी में
ख्याल मंजूषा-हिंदी में
दर्दे तिन्हा-उर्दू में
गीत निकुंज- हिंदी में
मौज इ तरब-गजलों (पुस्तक आने वाली है)

संपर्क : श्री कृष्ण मंजर

निवास : प्लाट नं. 963, सैक्टर-23, हूडा, भिवानी, हरियाणा, मोबाइल नंबर : 9812311978

प्रस्तुति :
श्री सचिन मेहता
7988010075

भिवानी परिवार मैत्री संघ द्वारा कोविड काल में ऑक्सीजन कंसंनट्रेटर भिवानी भेजे गए, जिनका लोगों ने खूब लाभ उठाया। बहुत से लोगों ने अपनी भावनाएं पत्र द्वारा हमें भेजी हैं। जिनमें से दो पत्र हम प्रकाशित कर रहे है ।

अपना घर आश्रम
भिवानी,हरियाणा

आदरणीय प्रधान जी
प्रणाम।

जैसा आपको विदित है कि मेरे अनुज कृष्ण की करोना की वजह से तबीयत खराब होने के कारण हमें ऑक्सीजन की आवश्यकता थी। जिसके लिए मुझे आपकी संस्था ने ऑक्सीजन कंसंट्रेटर उपलब्ध करवाया। जिसका प्रयोग मेरे छोटे भाई के द्वारा किए जाने पर आज वह पूर्णतया स्वस्थ है। हम सभी परिवारजन आपका एवं आपकी संस्था अपना घर आश्रम का हृदय से आभार प्रकट करते है। प्रभु चरणों मे आपकी संस्था के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

निवेदक : डॉ महेंद्र पंवार
मो: 9711118544

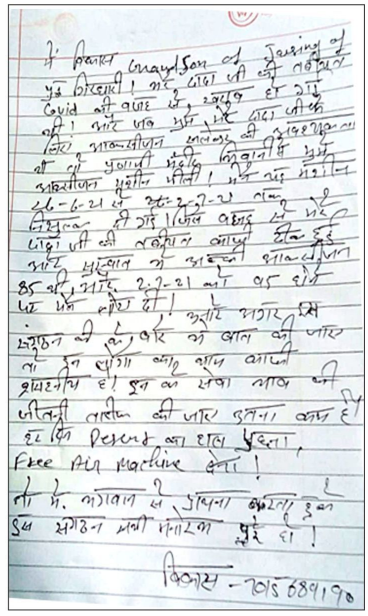

तेजस्विनी

RENU

तेजस्विनी नाम को सार्थक करती एक सीधी-सादी व प्रतिभाशाली युवा शक्ति का नाम है 'रेनू'। श्री भागीरथ मल व संतोष देवी की जुझारू बेटी रेनू ने स्कूल समय से ही किक बॉक्सिंग को खेल के रूप में चुना तथा राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अपने विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। भाग्य की विडंबना की रीड की हड्डी में गैप आ जाने के कारण रेनू को डॉक्टर द्वारा आजीवन खेलने के लिए मना कर दिया गया, परंतु रेनू ने हार नहीं मानी और जिंदगी को एक नई दिशा में मोड़ा। एक संकल्प के रूप में रेनू ने योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाया। इसे अपनाकर उसने न सिर्फ अपने आप को रोग मुक्त किया बल्कि हजारों लोगों को योग से जोड़ा, इसके बाद रेनू ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा आज योग के बल पर ही रेनू न सिर्फ अपने पैरों पर खड़ी है, बल्कि परिवार के लिए भी एक जिम्मेदार बेटी की भूमिका निभा रही है। अपने परिवार के लिए रेनू वह धुरी है जो बेटी होकर भी बेटे के समान अपना फर्ज पूरा कर रही है। 30 अप्रैल 2016 को रेनू ने अपनी अभिन्न मित्र कविता के साथ मिलकर कायाकल्प योग केंद्र की स्थापना की और समाज के सभी वर्गों विशेषकर बच्चों को इससे जोड़ योग की शिक्षा देनी आरंभ की। आज तक यह दोनों बेटियां करीब 200 बच्चों को योग के माध्यम से खेलों के लिए तैयार कर चुकी हैं। पतंजलि योग समिति या शहर की खेल कार्यक्रमों में इनके द्वारा तैयार किए गए बच्चों का प्रदर्शन कौतूहल और अचरज से भरा होता है। योग के साथ संगीत को जोड़कर बच्चों को योग सिखाने के अद्भुत शैली की प्रत्येक जन प्रशंसा करता है। पतंजलि तहसील प्रभारी के रूप में रेनू ने गरीब बस्तियों व कॉलोनियों तथा शहर के पार्कों में नि:शुल्क योग शिविरों का आयोजन किया है। समाज सेवा के अनेकों कार्यक्रमों में रेनू बढ़ चढ़कर हिस्सा लेती हैं और नि:स्वार्थ भाव से अपनी सेवाएं देती हैं। कहते हैं प्रतिभा किसी सहारे की मोहताज नहीं होती अगर उसमें लगन, निष्ठा व काम करने का जुनून हो तो वह अपना मुकाम पा ही लेती है रेनू भी उन्हीं में से एक है, जिन्होंने अभाव में रहते हुए भी अपने सपनों को वह पंख दिए हैं जिसके आगे आसमान भी नतमस्तक है। वास्तव में बेटियां विशेष है यदि वे मजबूत बन जाएं और अपना लक्ष्य निश्चित कर ले तो उन्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। रेनू की इस छोटी सी यात्रा में उसका आत्मविश्वास, निर्भीकता कार्य के प्रति सच्ची लगन और काम करने का जुनून उसके साथी रहे हैं। रेनू के हौसले उसकी सादगी सरलता और काम करने के जज्बे का प्रत्येक जन कायल है।

यही कारण है की समाज में खुद के द्वारा बनाए गए रेनू के मुकाम को हर कोई प्रणाम करता है।

प्रस्तुति :
श्रीमती अनिता नाथ
9896517300

मेरी कलम से

मंजीत मरवाहा

जिन्दगी जीना एक कला
इससे पहले कि जीवन चूके।
इससे पहले कि सब कुछ छूटे।।
और जीवन लगने लगे बला।
सीखें जीवन जीवन की कला।।

जन्म लेना हमारे हाथ में नहीं लेकिन इसे सुन्दर बनाना हमारे हाथ में है। सुख की संभावना हमारे हाथ में है तो दु:ख कैसा, शिकायत कैसी ? हम अपने भाग्य को क्यों कोसे या दूसरों को दोष क्यों दें ? पृथ्वी रहस्यपूर्ण है और इंसान भी। जितने रहस्य पृथ्वी तल पर घटित होते हैं उससे ज्यादा इन्सान के अंत: स्थल पर घटते है। कहां, किसमें, क्या और कितना रहस्य छिपा है उसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। जीवन के और खुद के रहस्य को समझना और दोनों का आपस में तालमेल बिठाना ही जीवन जीने की कला है।

जब सपने हमारे हैं तो उन्हें प्राप्त करने की कोशिश भी हमारी ही होनी चाहिए। जीवन की यह यात्रा सरल, सीधी नहीं है। इसमें सुख दुख दोनों है। इसमें संघर्ष, तकलीफें और परीक्षा भी है। ऐसे में स्वंय को हर परिस्थिति के लिएए माहौल के लिए सजग एवं संतुलित रखना ही वास्तव में एक कला है।

जिन्दगी कभी आसान नहीं होती,
इसे आसान करना पड़ता है
कुछ नजर अंदाज करके
कुछ को बर्दाश्त करके

जीवन छोटा है, उसे अच्छी तरह जिए। मन को समझना जरुरी है क्योंकि मन संभाल लिया तो समझो जीवन संभाल लिया। अनुभवियों का कहना है कि जीवन एक साधना है अर्थात् जीवन जीना एक कला है जिसके लिए जरुरी है कि हम इस जीवन को और खुद को संभालें।

जीवन और कुछ नहीं आधा गिलास पानी भर है। सुख दुख से भरा यह जीवन हमारे नजरिए पर टिका है। गिलास एक ही है, परन्तु किसी के लिए आधा गिलास खाली है तो किसी के लिए आधा भरा हुआ। ऐसे ही किसी के लिए जीवन दुखों का अम्बार है तो किसी के लिए खुशियों का खजाना। कोई इस जन्म को सौभाग्य समझता है तो कोई दुर्भाग्य ! एक ही जीवन है एक ही अवसर है परन्तु फिर भी अलग अलग सोच। यह कहावत इसी को दर्शाती है।

जा की रही भावना जैसी,
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी

बात नजरिए की है। एक कथा नजरिए को दर्शाती है। मन्दिर निर्माण में लगे तीन मजदूरों से पूछा गया कि क्या कर रहे हो। एक मजदूर के जवाब में गुस्सा था। शिकायत भरी आवाज और अन्दाजा में बोला 'देख नहीं रहा इस पत्थर को तोड़ रहा हूं, पसीना बहा रहा हूं और क्या दूसरे मजदूर का जवाब अलग था। आंखे नम और आवाज में दर्द था लेकिन शिकायत नहीं थी। कुम्हलाते स्वर में बोला 'पापी पेट के लिए रोटी जुटा रहा हूं। जिंदा रहने का जुगाड़ कर रहा हूं।' वहीं तीसरे मजदूर ने इसी सवाल का जवाब बिल्कूल अलग दिया। संगीतमय, भक्तिमय लहजे में आनंदित स्वर में बोला 'मैं भाग्यशाली हूं। उस परमात्मा ने मुझे नेक काम दिया। मैं तो पूजा कर रहा हूं। यहां मंदिर बनने जा रहा है। मैं उसमें सहयोग कर रहा हूं। आभारी हूं परमात्मा का। उसने एक नेक कार्य के लिए मुझे चुना।

इस तीनों में सिर्फ नजरिए का फर्क था दृष्टिकोण के कारण ही सब कुछ सुख दुख, धन्यवाद शिकायत में बदल जाता है। बेरूह होकर जीने में आनन्द नहीं। बिना जिंदादिली के लिए तो क्या जिए। कहते हैं-

जिंदादिली ही जिंदगी का नाम है।
मुर्दादिल क्या ख़ाक जिया करते है।

जीवन जीने की कला से वंचित व्यक्ति जीवन के उस समग्र अनुभव से वंचित रह जाता है जिसके अभाव से व्यक्ति का जीवन उस वृक्ष की तरह हो जाता है जिसमें ना तो कभी फूल लग सकते हैं और ना ही फल। उन्हें आनंद की अनुभूति कभी नहीं होती। जो आज तुम्हारा है कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। यही सोचो जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है-अच्छा हो रहा है, जो होगा अच्छा होगा। भूत का पश्चाताप और भविष्य की चिंता मत करो। वर्तमान को जियो और अच्छे कर्म करो आगे बढ़ो। फल की इच्छा मत करो।

कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

व्रत-त्योहार अगस्त 2021

- **कांवड़ शिवरात्रि- 6 अगस्त, शुक्रवार**
- **हरियाली मधुश्रवा तीज-11 अगस्त, बुधवार**
- **नाग पंचमी-13 अगस्त, शुक्रवार**
- **तुलसीदास जयंती-15 अगस्त रविवार**
- **रक्षाबंधन, श्रावणी-उपाकर्म-22 अगस्त, रविवार**
- **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (सबका)- 30 अगस्त, सोमवार**
- **गुग्गा नवमी-31 अगस्त, मंगलवार**

राजेश चेतन

चेतन वाणी

संध्या होते खाट-बिस्तरे, पंखे तक लग जाते थे
छत पर पानी का छिड़काना देखा मेरी पीढ़ी ने

ढिबरी, दिया और लालटेन घर-घर में जलते देखी है
बत्ती वाला स्टोव जलाना देखा मेरी पीढ़ी ने

साबुन, शैम्पू, तोबा-तोबा य मुल्तानी मिट्टी मलते
बालों में नित तेल लगाना देखा मेरी पीढ़ी ने

एंटीना थे ऊँचे-ऊँचे, श्वेत-श्याम टेलिविजन
चित्रहार का फिल्मी गाना देखा मेरी पीढ़ी ने

गिल्ली-डंडा पतंग उड़ाना देखा मेरी पीढ़ी ने
यार दोस्तों से बतियाना देखा मेरी पीढ़ी ने

बैल-गाड़ियां, ट्रैक्टर-ट्राली, टैम्पो-मेटाडोर मिली
बस की छत पर चढ़कर जाना देखा मेरी पीढ़ी ने

तख्ती पोती कलम चलाई और स्लेट पर खूब लिखा
मास्टर जी से डंडे खाना देखा मेरी पीढ़ी ने

काला धुंआ, भाप का इंजन, छुक-छुक पैसेंजर ट्रेनें
बिस्तर बंद कांधे लटकाना देखा मेरी पीढ़ी ने

पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय-चिट्ठियाँ, मनीऑर्डर और तार
डाकिये का आवाज लगाना देखा मेरी पीढ़ी ने

घर छोटे, परिवार बड़े थे, लोग मगर दरियादिल थे
रिश्तेदारी खूब निभाना देखा मेरी पीढ़ी ने।

सेवा समितियां

भिवानी परिवार मैत्री संघ द्वारा संस्था के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए जिन समितियों का गठन किया गया था उनका विवरण इस प्रकार है।

1. डी.डी.ए. प्लॉट समिति : श्री अरविंद गर्ग, 9811757577
2. बिजनेस पाठशाला : श्री हंसराज रल्हन, 9212163340
3. संविधान समिति : श्री दिनेश गुप्ता, 9810003215
4. बधाई एवं संवेदना संदेश समिति : श्री हरिकृष्ण अग्रवाल, 9873238530
5. 24 x 7 हेल्थ हेल्प लाईन : श्री पवन मोडा, 9350461306
6. अपना घर आश्रम समिति : श्री सांवरमल गोयल, 9990541122
7. शिक्षा बैंक : श्री पंकज गुप्ता, 9654909070
8. नेत्रदान-देहदान समिति : श्री एन.आर.जैन, 9711917855
9. वैब पोर्टल : श्री प्रमोद शर्मा, 9868162572
10. कृत्रिम अंग सेवा समिति : श्री नवीन जयहिंद, 9313581995
11. आपदा राहत समिति : श्री दिनेश गुप्ता, 9810003215
12. रोजगार समिति : श्री सुशील गनोत्रा, 9899454931
13. विवाह सुझाव एवं मैटरीमोनियल समिति : श्री विनय सिंघल, 9999190575
14. जल सेवा समिति : श्री हरिकृष्ण अग्रवाल, 9873238530
15. पर्यटन समिति : श्री मनीष गोयल, 9811195512
16. यू-ट्यूब समिति : श्री राजेश चेतन, 9811048542
17. वस्त्र एवं औषधि संग्रहण समिति : श्री गोविंदराम अग्रवाल, 9312923340
18. वरिष्ठ नागरिक मनोरंजन केन्द्र (लाइब्रेरी) : श्री विनय सिंघल, 9999190575
19. हमारा बुक बैंक समिति : श्रीमती पूजा जैन, 9212232753

अगर आप भी इनमें से किसी समिति से जुड़ना चाहते है या अपने सुझाव देना चाहते है तो आप समिति के संयोजक से संपर्क कर सकते है।